नव विचार

मार्लबोरो हिंदी स्कूल पत्रिका - अप्रैल 2019

गरबा नृत्य 2018

मार्लबोरो हिंदी स्कूल में पहली बार गरबा एवं डांडिया समारोह का आयोजन किया गया। गरबा पश्चिम भारत के गुजरात राज्य का एक प्रमुख नृत्य है। गरबा में स्त्री पुरुष रंग बिरंगे वस्त्र पहन कर एक गोल घेरा बनाकर घूम घूम कर नृत्य करते हैं और कई लोग दर्शक बन कर इसका आनंद लेते हैं।

भारत के गुजरात प्रदेश में नवरात्रि के अवसर पर जगह जगह गरबा नृत्य समारोह का आयोजन किया जाता है। इस समारोह में देवी दुर्गा की पूजा भी की जाती है। सब लोग नृत्य के बाद मिठाइयों और अन्य व्यंजनों का आनंद लेते हैं। यह नृत्य अब इतना प्रचलित हो गया है कि सारे उत्तर भारत के प्रदेशों में इसका आयोजन किया जाता है।

गरबा की तरह डांडिया भी एक प्रकार का नृत्य है जिसमें सब लोग लकड़ी के दो डंडों के साथ गोलाकार नृत्य करते हैं। इस नृत्य में कई सारे डंडों के एक साथ एक आवृत्ति में खड़कने की ध्वनि एक बहुत ही संगीतमय वातावरण बना देती है।

गरबा और डांडिया को मां दुर्गा और महिषासुर के बीच हुई लड़ाई का नाटकीय रूपांतर माना जाता है। इस नृत्य में प्रयोग की जाने वाली डांडिया को मां दुर्गा की तलवार के रूप में माना जाता है। यही कारण है कि इस नृत्य को 'The Sword Dance' के नाम से भी जाना जाता है।

मार्लबोरो हिंदी स्कूल के गरबा नृत्य समारोह में मार्लबोरो के लगभग २०० परिवारों ने हिस्सा लिया।

भारतीय त्यौहारों की विशेषता

भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृत्तियों में से एक है। भारत की विविधता के कारण, भारत में लोग कई अलग-अलग धर्मों का पालन करते हैं और अनेक त्यौहार मनाते हैं। भारतीय त्यौहार आमतौर पर बहुत जीवंत और मनोरंजक होते हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी उम्र के लोग इन समारोहों में भाग ले सकते हैं। ये ऐसे समय होते हैं जब पूरे परिवार, दोस्त और समाज एक साथ मौज-मस्ती करने आते हैं। भारत में कई अलग-अलग धर्मों और भाषाओं वाले अलग-अलग राज्य हैं। इनमें से प्रत्येक अलग-अलग त्यौहार मनाते हैं जो भारत को इतने विविध होने की अनुभूति देते हैं। हालाँकि पूरे भारत में त्योहारों के अलग-अलग नाम हैं, फिर भी वे एक ही उद्देश्य से काम करते हैं। यह उद्देश्य लोगों को एक साथ आने और मौज-मस्ती करने और अतीत की सभी समस्याओं को भूल जाने देना है।

एक भारतीय त्योहार में, लोग भोजन करते हैं, नृत्य करते हैं, सजावट करते हैं, संगीत सुनते हैं, लोगों से मिलते हैं और भगवान की पूजा करते हैं। कुछ भारतीय त्योहार हैं दीवाली, होली, राखी, पोंगल, और नवरात्रि। इन सभी त्योहारों को अपने स्वयं के उद्देश्यों के लिए मनाया जाता है जैसे कि एक निश्चित देवता की पूजा करना या एक संदेश फैलाना।

दीवाली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश फैलाता है और उस समय का प्रतिनिधित्व करता है जब भगवान राम अपने वनवास से वापस घर आए थे। त्यौहार होली पवित्र आग में सभी बुरी आदतों और बुरे कर्मों को जलाने का संदेश देता है। यह एक आग बनाकर और उसमें ऐसी चीजें डालकर मनाया जाता है जिन्हें आप भूलना चाहते हैं। अगले दिन, लोग यह दिखाने के लिए रंगों के साथ खेलते हैं कि बुरे कर्म जलने के बाद, जीवन अच्छा और रंगीन होगा। त्यौहार राखी में, एक भाई अपनी बहन को जीवन भर उसकी रक्षा करने का वचन देता है। इससे एक परिवार में एकता और प्यार पैदा होता है। अंत में, भारतीय त्योहारों का महत्व यह है कि कई लोग एक साथ जश्न मनाने और एकता दिखाने के लिए आते हैं। ये त्यौहार लंबे समय से मनाया जाता रहा है जो भारतीय लोगों में उत्सव की भावना को दर्शाता है। यही कारण है कि भारत इतना विविधतापूर्ण होते हुए भी इतना एकजुट और रंगीन है।

- सार्थक गुप्ता

दीपावाली समारोह में मार्लबोरो हिंदी स्कूल के छात्रा और छात्राएँ कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।

इस कार्यक्रम में हमारे स्कूल के शिक्षकों ने भी भाग लिया और
अपनी कला का प्रदर्शन किया।

कुछ स्मृतियाँ (डॉक्टर ज्योति अग्रवाल की याद में)

- डॉक्टर वेद चौधरी

मेरी यादें ज्योति के साथ सन 1984 से जुडी हुई हैं जब अग्रवाल जी ने बैल लैब्स में नौकरी शुरू की और मार्लबोरो में रहने लगे। उसी वर्ष हमने वेद मंदिर में एक धार्मिक कार्यक्रम शुरू किया जिसमें बैल लैब्स से जुड़े कई परिवार भाग लेते थे। वहाँ पालीवाल दम्पति के साथ, रजनी और मैंने लगभग 16 बच्चों को हिंदी भाषा, भारत की सभ्यता, और हिंदू धर्म के बारे में पढ़ाना शुरू किया। ज्योति (और उसकी बड़ी बहन नीलू) भी हमारी कक्षा में शामिल थे ।

ज्योति उस समय 8 वीं या 9 वीं कक्षा में रही होगी । मुझे उस समय से ही याद है कि ज्योति एक मेधावी बालिका थी जिसे ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र जिज्ञासा थी। वह हमेशा हिंदू धर्म और हमारे देवी, देवताओं, रीति-रिवाजों, और परंपराओं के बारे में सबसे अधिक प्रश्न पूछती थी । कॉलेज जाने के बाद भी जब वह गर्मी की छुट्टियों में घर आती थी, तो वेद मंदिर में हमारे कार्यक्रम में अवश्य भाग लेती थी, और मुझसे उस दिन के प्रोग्राम के बारे में, या वेद मंदिर की मूर्तियों के बारे में, या हमारी परंपराओं के बारे में प्रश्न पूछती थी। ज्योति से मेरा स्नेह और संपर्क बढ़ता गया यह देख कर कि इतनी छोटी उम्र में इसे हमारी संस्कृति और परंपराओं के प्रति ऐसी जिज्ञासा और रुचि है।

एक और प्रकरण जो मुझे हमेशा याद रहेगा, वह यह है कि ज्योति न केवल बौद्धिक रूप से प्रेरित थी, बल्कि वह अपने शारीरिक स्वास्थ्य को भी ठीक रखने में बहुत प्रयत्नशील थी । वह हाई स्कूल में ट्रैक और फील्ड के कार्यक्रम में सक्रिय भाग लेती थी । सप्ताह में कई बार ज्योति अपने घर से दौडती हुई मेरे घर और पड़ोस तक आती थी। मुझे एक शनिवार की याद है, जब सबेरे सबेरे किसी ने दरवाजा खटखटाया। मुझे किसी के आने की प्रतीक्षा नहीं थी, इसलिए जब मैंने दरवाजा खोला, तो ज्योति को अपने दरवाजे के सामने खड़ा देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। उसने अपना जॉगिंग आउटफिट पहना हुआ था। इसलिए मैंने सोचा कि वह शायद थक गयी है और कुछ मिनट यहाँ रुक कर आराम करना चाहती है। लेकिन नहीं, ज्योति ने कहा कि वह घर के अंदर नहीं आयेगी, वह बस एक गिलास पानी पीने के लिए रुकी है। मैंने उसे एक गिलास पानी दिया। ज्योति ने मेरे दरवाजे के सामने चहल कदमी करते हुये धीरे धीरे पानी पिया और फिर हमारे मोहल्ले की सड़को पर जॉगिंग करती हुई अपने घर चली गई। उसके बाद वह जब हमारे घर पर रुकती थी तो मुझे मालूम था कि वह सिर्फ पानी पीने आयी है।

यह इतनी छोटी सी बात मुझे इतने सालों तक क्यों याद रही? इसलिए कि एक छोटे पल में हमें यह आभास हुआ कि ज्योति हमारे परिवार के साथ एक आत्मीयता और अपनेपन का सम्बन्ध रखती है । वह हमारे परिवार को अपने वृहत परिवार का एक अभिन्न अंग मानती थी।

अंत में मुझे बस यही याद रहेगा कि ज्योति कितनी स्नेहमयी और विनम्र लड़की थी। जब भी मैंने उसे देखा तो वह हमेशा विनम्रता के साथ मुस्कुराती दिखाई दी। अंतिम समय मैंने उसे केयरवन सुविधा में देखा था, ज्योति ने बड़ी मुस्कुराहट के साथ, और एक सुंदर टिप्पणी के साथ, मेरा अभिवादन किया और अपने दुर्बल शरीर से भरपूर शक्ति का आह्वान करके वह अपनी चारपाई पर बैठ गयी और कई मिनटों तक मेरे साथ बातचीत करती रही । अंत में एक शांति पाठ पढ़ कर उसने हमारी बैठक समाप्त की। उस प्रार्थना के कुछ शब्द इस प्रकार है: - भगवान मुझे उन कार्यो को करने के लिए साहस दें जो मैं कर सकती हूं - और धैर्य के साथ उन चीजों को स्वीकार करने की क्षमता दें जिन्हें बदला नहीं जा सकता।

ज्योति - मुझे सदैव याद रहेगा कि कितने गरिमापूर्ण विधि से तुमने इस प्रार्थना का पाठ किया और अपने निकट भविष्य के संकट का संकेत दिया। यह मेरे साथ ज्योति के अंतिम शब्द थे। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह हमारी स्नेहमयी ज्योति की उत्कृष्ट मानवता से भरपूर आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करे।

ॐ शांति: शांति: शांतिः

स्कूल की क़लम से

हिन्दी स्कूल - एक अनुभव

मेरा नाम काव्या जैन है और मैं तेरह साल की हूँ। मैं आठवीं कक्षा में हूँ और मैं हिंदी स्कूल में दस साल से पढ़ रही हूँ।मेरे बहुत सारे शौक़ हैं जैसे फ़ुट्बॉल, गाना, कथक नृत्य, फ़ील्ड हॉकी, और हिंदी सीखना।

मैंने छोटी आयु से ही हिंदू संस्कृति और भाषा के बारे में सीखा है। हिंदी स्कूल की वजह से आज मैं हिन्दी बोल और लिख सकती हूँ| मुझे याद है जब मैं दो साल की थी और हम सिर्फ वर्णमाला सीख रहे थे और अब, मैं सबसे सुपीरियर क्लास में हूँ और मैं दुनिया की समस्याओं के बारे में हिंदी में विवाद कर सकती हूँ। मैं अपनी नानी और दादी से हिन्दी में बात कर सकती हूँ, जिससे वह बहुत खुश हो जाती हैं। मैं भारत में रहने वाले अपने रिश्तेदारों से भी हिन्दी में संवाद कर सकती हूँ। मैं हिन्दी सिनेमा और संगीत भी समझ पाती हूँ और इनका आनंद लेती हूँ। इसके अलावा, एक और भाषा सीखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। इससे मुझे अपनी संस्कृति के करीब होने का भी एहसास होता है। मैं भारत के रीति-रिवाजों, उनके द्वारा मनाए जाने वाले त्योहारों और इसके पीछे के इतिहास के बारे में भी सीख रही हूँ।

हिन्दी स्कूल मेरे लिए एक बहुत ही प्यारा अनुभव रहा है। चाहे वह हर साल दिवाली/होली समारोह में भाग लेना, वाद विवाद प्रतियोगिता, गर्मियों में हिंदी कैम्प या हिंदू संस्कृति के बारे में सीखना, हिन्दी स्कूल में मैंने बहुत कुछ सीखा है। भारत से दूर रह कर भी मैं हिन्दी स्कूल की वजह से इसके करीब हूँ। मैं हर बच्चे को हिन्दी स्कूल आने की सलाह दूँगी।

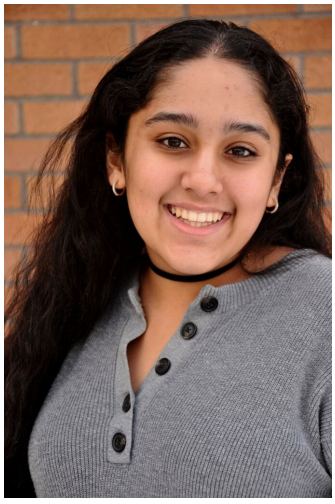

- काव्या जैन

बालक

आँखों में चमक
मुख पे मुस्कान लिए
ये कुछ बड़े
कुछ छोटे बालक ,
मन में प्रश्न, विस्मय
संदेह और कौतुहल
का अम्बार लिए।

उजली भोर जैसे
तुम आये यंहा
नित ज्ञान का सागर
ले बढ़ चले
है यही कामना
नव दीप तुम्हारे
कर कमलों से बलें।

नटखट चंचल प्रफुल्लित होते
चकित करते घडी- घडी
छोटे छोटे सपनो में
आशाएं है बड़ी बड़ी
लो आज इन भविष्य के
निर्माताओं के उदय की
घडी आ गई।

- वंदना शर्मा

मार्लबोरो हिंदी स्कूल के प्राध्यापक की ओर से सबको होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

कवि की कल्पना

पुल

लंवा पुल, विशाल पुल,
सुंदर पुल, ऊंचा पुल,
भूमि को जोडे ये पुल,
ऐसा शानदार ये पुल।

हरी धरती, गीली धरती,
पथरी धरती, कठोर धरती,
पुल को जो सहारा दे,
ऐसी शानदार ये धरती।

खुश लोग, हर्षित लोग,
चलते लोग, भागते लोग,
अंजान मगर एक राह,
ऐसे शानदार ये लोग।

- सुहान राठी

मिट्टी की खुश्बू

हम नही जानते

की हम कितना खाते

किसान के काम

में है शोभा और नाम

लम्बे दिन और लम्बी रात

जमीन में है उनके हाथ

भारत की जान

है ये किसान की शान

प्यार से करते मेहनत

पर हम नही सोचते, है ना?

मिट्टी की खुशबू और उनके फल

किसान का त्याग और अनके हल

किसान नहीं तो हम नहीं

हमारे लिये खाना नहीं

हमे मानना चहिये उनका अहसान

देते है हमे भोजन का दान

कितने अच्छे है हमारे किसान

देश में वह सबसे महान

- श्रेया पिशोरी

निकीता राणा और श्रेया पिशोरी ने २०१८ दिवाली समारोह में सूत्रधार की सफल भूमिका निभाई

Newsletter Editors : Rakesh Chandwani & Vandana Sharma